अध्याय 10

याजकीय कार्य की असफलताएँ

पिछले वर्ष से लेकर अब तक इस्राएल ने सोने का बछड़ा बनाने और उसकी पूजा करने से सम्बन्धित बुरे परिणाम का अनुभव किया था (निर्गमन 32)। उस घटना से पहले परमेश्वर ने अनुग्रहकारी होकर अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया और उन्हें जंगल से होकर सिनै पर्वत की ओर लिए चला। वहाँ पर परमेश्वर ने उनके साथ वाचा बाँधी और उन्हें आशीष देने का वायदा किया। उन्हें परमेश्वर की एक अद्‌भुत उपस्थित के गवाह बनने का और व्यवस्था प्राप्त करने का विशेष अधिकार प्राप्त हुआ। ऐसा लग रहा था कि इस्राएल की समृद्धि सुनिश्चित कर दी गई। परमेश्वर अब उनका परमेश्वर था; उन्होंने वह सब कुछ प्राप्त किया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी; उसने उन्हें व्यवस्था दी और उसने खुद को समर्पित आराधना का एक स्थान निर्मित करने के निर्देश दिए; और शीघ्र ही वे लोग वायदे के देश की ओर अपने मार्ग पर बढ़ने वाले थे। उनका भविष्य उज्जवल दिखाई दे रहा था - परन्तु उसी समय कुछ घटना घटी - सोने के बछड़े की घटना! परमेश्वर उनसे क्रोधित हो गया और अनेक लोग मारे गए।

इतिहास फिर से दोहराया गया जैसा हम अध्याय 10 में देखते हैं। परमेश्वर ने इस्राएल को छोड़ा नहीं। उन्होंने परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार निवासस्थान का निर्माण किया; तब उन्होंने इसका पवित्रीकरण किया और जो याजक इसमें सेवकाई करने जा रहे थे वे सब कार्य उसी समान कर रहे थे जैसा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी। पवित्रीकरण की प्रक्रिया के अन्त में फिर से भविष्य उज्जवल दिखाई देने लगा। फिर कुछ घटना घटी - नादाब और अबीहू का पाप। हारून के दो बड़े बेटों ने परमेश्वर के सम्मुख "ऊपरी आग" चढ़ाई, और परमेश्वर ने उन्हें मार डाला। उनके पवित्रीकरण के बाद प्रथम रिकॉर्ड की गतिविधि में याजकीय कार्यालय, जो कि वायदों से भरा हुआ था, इतना ध्यानपूर्वक तैयार किया गया था और परमेश्वर के अनुग्रह की धारा प्राप्त करने के लिए पवित्र किया गया था, वह परमेश्वर के क्रोध का लक्ष्य बन गया।

रिचर्ड एन. बोयन्स ने यह संकेत दिया कि इन दो घटनाओं में उज्जवल भविष्य का विपरीत देखने को मिलता है यह सम्पूर्ण बाइबल इतिहास को बताता है:

> बाइबल में एक तरीका दिया गया है जो अन्त तक बना रहता है। अगर चीज़ें बहुत बुरी हो जाएँ तब प्रतीक्षा करें और धीरे से सारी कहानी एक अच्छा मोड़ ले लेगी। प्रतिकूल तरीके से जैसा इस घटना में देखने को मिलता है, अगर चीज़ें

बहुत अच्छी चल रही होती हैं - परमेश्वर आज्ञा दे रहा है और लोग आज्ञा का पालन कर रहे हैं - प्रतीक्षा करें क्योंकि चीज़ें बुरे के लिए धीरे से एक मोड़ ले लेगी।[1]

लैव्यव्यवस्था 10 याजकीय कार्यालय की असफलता और इसके बाद के परिणाम का वर्णन प्रदान करता है। ये घटनाएँ युगों तक परमेश्वर के लोगों को उन चेतावनियों का स्मरण कराती रहें जैसा पौलुस के द्वारा 1 कुरिन्थियों 10:12 में बताया गया: "इसलिये जो समझता है, मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।"

पहली असफलता: "ऊपरी आग चढ़ाना" (10:1-15)

नादाब और अबीहू का पाप, और इसके लिए दण्ड दिया जाना (10:1-3)

[1]तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। [2]तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए। [3]"तब मूसा ने हारून से कहा, यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था कि जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।" और हारून चुप रहा।

यह अध्याय एक हिला देने वाले नोट के साथ नादाब और अबीहू के पाप और इसके लिए उन्हें मिलने वाले दण्ड की कहानी को संक्षिप्त रुप में बताने के साथ आरम्भ होता है।

आयत 1. नादाब और अबीहू, हारून के दो बड़े **बेटे** थे (निर्गमन 6:23)। पूर्व में वे लोग "दूर से" (निर्गमन 24:1, 9, 10) परमेश्वर की आराधना करने के लिए मूसा, हारून, और इस्राएल के सत्तर पुरनियों के साथ थे। इस अवसर पर याजकों के रुप में उनकी भूमिका में उन लोगों ने **परमेश्वर को ऊपरी आग चढ़ाई**। पाठ्य यह नहीं बताता कि यह कब हुआ। पूर्वानुमान के अनुसार यह अध्याय 8 और 9 में घटनाओं का रिकॉर्ड रखने के कुछ समय बाद ही हुआ होगा। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि यह लैव्यव्यवस्था 9 में घटनाओं का विवरण देने के दिन अथवा उसके एक दिन बाद हुआ। यह सच्चाई कि यह अध्याय बाद में हारून पर "परमेश्वर के अभिषेक के तेल" (10:7) के बारे में बताता है इस प्रकार सम्भावित रुप से यह इस दृष्टिकोण के लिए साक्ष्य उपलब्ध करवाता है। फिर भी, जैसा यह पाठ्य उस दिन की पहचान नहीं करता इसलिए कोई भी जन इस बात को सुनिश्चित नहीं कर सकता कि उस दिन क्या हुआ था।

जिस समय आगे के अध्याय निवासस्थान के सम्मुख पीतल की वेदी पर चढ़ाई जाने वाली बलियों के बारे में हैं, ठीक इसी समय नादाब और अबीहू के द्वारा किया

गया पाप उस वेदी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखता। इसका सम्बन्ध निवासस्थान के अन्तर्गत धूपवेदी के साथ था। ये दो याजक धूप चढ़ा रहे थे न कि पशु। यहाँ पर पद ऐसा कहता है कि उन लोगों ने **अपना अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी**। अन्य शब्दों में उन्होंने धूपदान ("धूपदानी"; NIV) में जलते हुए कोयले भरे जिन्हें इस प्रकार तैयार किया गया था कि इस प्रकार के कोयलों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके जिससे कि पहले से जल रहे अँगारों से और आग जलाई जा सके। उन्होंने **उसमें धूप भरने** के बाद "परमेश्वर के सम्मुख ऊपरी आग चढ़ाई।"

आयत 2. जैसे ही इन दो याजकों ने धूपवेदी पर "ऊपरी आग" चढ़ाई उसी समय **यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए**। उन लोगों ने "परमेश्वर के सम्मुख" (10:1) अपनी धूप की बलि चढ़ाई और वे "यहोवा के सामने" मर गए (10:2)। इस प्रस्तुतिकरण का ऊपरी तौर पर अर्थ यह है कि उन लोगों ने ये काम (अथवा ये चीज़ें उनके साथ उस समय हुई) "परमेश्वर की उपस्थिति में," अथवा और भी अधिक विशेष रुप से बताते हुए, निवासस्थान के आस-पास किया। एक अर्थ में यह वहाँ किया गया जहाँ पर परमेश्वर रहता था।

जिस प्रकार परमेश्वर ने आग के द्वारा याजकों के पवित्रीकरण को स्वीकृति दी (9:24), उसी प्रकार उसने इस बलिदान के लिए अपना विरोध आग के द्वारा प्रकट किया![2] यह जानकारी नहीं है कि यह "आग" किस प्रकार की थी। ऐसा हो सकता है कि ये दोनों याजक बिजली की मार के समान किसी चीज़ के द्वारा मार डाले गए हों। मृत याजकों के "अंगरखे" पूरी तरह से जले नहीं न ही उनके शरीर जले (10:5)। वास्तव में महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि स्वयं परमेश्वर ने उनके पाप के लिए उनका न्याय किया। उसने तुरन्त अपना न्याय प्रकट किया जिस प्रकार बाइबल में रिकॉर्ड की गई अन्य घटनाओं में उसने किया।[3]

उनको तुरन्त दिए गए दण्ड से एक प्रश्न उत्पन्न होता है जो कि औसतन पाठको के मन में उपयुक्त रुप से उठेगा: नादाब और अबीहू के पाप की प्रकृति किस प्रकार थी जिसके कारण परमेश्वर ने उन्हें मार डाला? इसका उत्तर वह पद देता है जो यह कहता है कि उन लोगों ने वह "ऊपरी आग" चढ़ाई जिसके लिए परमेश्वर ने "आज्ञा नहीं दी थी" (देखें गिनती 3:4; 26:61)।

प्रायश्चित के दिन के लिए दिए गए निर्देश यह स्पष्ट करते हैं कि धूपवेदी पर जलाई जाने वाली आग होमबलि की वेदी से ली जाए (16:12)। इस कारण यह निश्चित है कि जो "ऊपरी आग" नादाब और अबीहू ने चढ़ाई वह किसी अन्य स्थान से ली गई थी। उन्होंने परमेश्वर की एक स्पष्ट आज्ञा की अवहेलना की। आगे, 10:3 और 10:10 ऐसे सुझाते हुए दिखाई देते हैं कि उन्होंने पवित्र के स्थान में अपवित्र को स्थान दिया। होमबलि की वेदी की आग को सम्भावित रुप से पवित्र माना जाता होगा; किसी अन्य प्रकार की आग, जिसमें उनके द्वारा चढ़ाई गई "ऊपरी आग" शामिल थी वह अपवित्र थी। पवित्र स्थान को अपवित्र आग से दूषित करना ऐसा पाप रहा होगा जिसके लिए मृत्यु निश्चित थी।

अन्य सम्भावनाएँ सुझाई गई हैं:

महायाजकीय विचार। 16:11-13 और निर्गमन 30:7, 8 में दिए गए निर्देश स्पष्ट करते हैं कि महायाजक के लिए यह आवश्यक था कि वह निवासस्थान के अन्तर्गत ही वेदी पर धूप जलाए और न तो नादाब और न ही अबीहू महायाजक था। सम्भावित रुप से उनके पाप में यह शामिल था कि उन्होंने महायाजक के विशेष अधिकारों में हस्तक्षेप करने के लिए पहले से ही विचार कर लिया था और उन्होंने अनियमित घमण्ड और गलत तरीके से निर्देशित अभिलाषा का एक आचरण प्रस्तुत किया।[4]

धूप की ओर का विचार। ऐसा हो सकता है कि जो धूप उन्होंने चढ़ाई वह पूर्व में परमेश्वर के द्वारा दी गई दिव्य विधि के अनुसार तैयार नहीं की गई हो (निर्गमन 30:34-38)। हो सकता है कि उन्होंने स्वयं की ही धूप चढ़ाई हो। कुछ लोग ऐसा विचार करते हैं कि नादाब और अबीहू नाश कर दिए गए क्योंकि उन्होंने आग पर "ऊपरी धूप" रखी (निर्गमन 30:9) और उसे "ऊपरी आग" बना दिया।

मद्यपान का विचार। हो सकता है कि ये दोनों शराब के नशे में हों जब इन्होंने अपना बलिदान चढ़ाने के लिए निवासस्थान में प्रवेश किया - और यह सम्भावना इसलिए सुझाई गई कि दाखमधु पीने के बाद मिलापवाले तम्बू में प्रवेश करने का अर्थ है तुरन्त मृत्यु प्राप्त करना (10:8, 9)। अगर वे इस दशा में थे तो जो कुछ भी वे चढ़ा रहे थे वह किसी भी प्रकार से परमेश्वर के सम्मुख स्वीकार्य नहीं था।[5]

इस सच्चाई के आधार पर पाठक इस बात से निश्चित हो जाता है: जैसे भी और जिस कारण से भी नादाब और अबीहू ने ऐसा किया उन्होंने वह "ऊपरी आग" चढ़ाई जिसके लिए परमेश्वर ने "आज्ञा नहीं दी थी" (10:1)। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया; और परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह एक प्राणघातक गलती थी। लोग परमेश्वर की आज्ञा के प्रति अनाज्ञाकारिता करने के बाद बच नहीं सकते।

आयत 3. ऐसा हो सकता है कि किसी के मन में यह विचार आए, "परमेश्वर ने नादाब और अबीहू को इस प्रकार के पाप के लिए क्यों मार डाला?" **हारून** स्वयं से ऐसा प्रश्न पूछ रहा होगा, चाहे जो भी हो उसने फिर भी इसके विषय में ऊँचे स्वर से पुकार कर कहा। **मूसा** ने यह विवरण प्रस्तुत किया: परमेश्वर ने कहा, **"जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।"**

इन शब्दों से परमेश्वर का अर्थ क्या था? पहला वाक्यांश यहाँ इस प्रकार बताया गया है, "जो लोग मेरे समीप हैं उनके सम्मुख मैं स्वयं को पवित्र घोषित करूँगा" (NRSV)।[6] अन्य संस्करणों के शब्द NASB के शब्दों के समान ही हैं। NKJV इस प्रकार बताती है, "जो मेरे समीप आएँ उनके द्वारा मैं पवित्र जाना जाऊँ।" REB इस प्रकार अनुवाद करती है, "जो लोग मेरे पास आते हैं उनके द्वारा मैं पवित्र जाना जाऊँ।" CEV की व्याख्या सम्भावित रुप से इस वाक्यांश का अर्थ अच्छी प्रकार से प्रस्तुत करती है: "मैं अपने याजकों से आदर चाहता हूँ।"

जॉन ई. हार्टले ने इस आयत के लिए ऐसा कहा कि "इस दुखद घटना" के बारे

में मूसा की व्याख्या ने "एक ऐसे तरीके के बारे में आवश्यक सिद्धान्त बताया जिसमें यहोवा याजकों और लोगों से सम्बन्ध रखता है। यहोवा ने ज़ोर देकर यह कहा कि जो लोग उसके समीप हैं उनके बीच वह अपने पवित्र चरित्र को प्रकट करेगा। अर्थात वह इस प्रकार कार्य करेगा जो उसके पवित्र चरित्र की गवाही दे सके।" उसकी पवित्रता उसके व्यवहार के बारे में विवरण देती है। हार्टले ने ऐसा भी बताया कि परमेश्वर के चरित्र के बारे में "एक सामान्य अर्थ भी है: यहोवा की पवित्रता उसके याजकों से आदर की माँग करती है जिसकी पहचान [קָרַב, *क्युरोबे*] शब्द से होती है जिसका अर्थ है, 'वे जो मेरे समीप हैं।'" आगे इस दुखद घटना का रिकॉर्ड रखा गया जिससे "मण्डली के लोग यहोवा की पवित्रता की एक उच्च जानकारी रखें और उसका आदर करने के लिए आगे बढ़ें।"[7]

आयत 3 में "जो मेरे समीप आते हैं," वाक्यांश परमेश्वर के याजकों की ओर संकेत करता है। वे परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँच रखते थे जिसकी निकटता में जाने के लिए अन्य लोगों के पास अधिकार नहीं था। "मुझे पवित्र जाना जाए" का अर्थ निसन्देह इस प्रकार है: "मुझे निश्चित रुप से पवित्र जाना जाए।" इसका अर्थ यह है कि नादाब और अबीहू ने परमेश्वर को पवित्र न जाना! उन्होंने "ऊपरी आग," अपवित्र आग चढ़ाई, मानो परमेश्वर सामान्य अथवा साधारण परमेश्वर हो और पूर्ण पवित्र के रुप में देखे जाने के योग्य न हो।

आगे, परमेश्वर ने यह नहीं चाहा कि मात्र याजक ही उसे उचित सम्मान दें परन्तु उसने चाहा कि शेष इस्राएली भी उसका आदर करें! यह आदर सम्भावित रुप से दो तरीकों से किया जा सकता है। (1) अगर याजक परमेश्वर के वचन का पालन करने के द्वारा उसका आदर करते हैं तो लोग भी परमेश्वर की स्तुति अपने अनुग्रहकारी प्रभु के रुप में करेंगे। (2) अगर याजक परमेश्वर की आज्ञा मानने में असफल होते हैं (जैसा कि वास्तव में हुआ) तो लोगों पर परमेश्वर की ओर से आने वाले बदले के परिणामस्वरुप अब भी लोग परमेश्वर के ऐसे सामर्थ और उसकी योग्यता की पहचान करते हुए जिसमें वह अपनी व्यवस्था लागू कर सके, उसका आदर करेंगे। उसकी भययोग्य उपस्थिति के कारण भी उसको स्तुति और आदर दिया जाना चाहिए!

मूसा के समझाने के बाद, **हारून ... चुप रहा।** उसके पास कोई वैध आधार नहीं था कि वह परमेश्वर के दण्ड के प्रति और अपने बेटों के वध के प्रति विरोध करे।

उनकी मृत्यु से व्यवहार करना (10:4-7)

[4]तब मूसा ने मीशाएल और एलसाफान को जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे बुलाकर कहा, "निकट आओ, और अपने भतीजों को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर छावनी के बाहर ले जाओ।" [5]मूसा की इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको अंगरखों सहित उठाकर छावनी के बाहर ले गए। [6]तब मूसा ने हारून से और उसके पुत्र एलीआज़ार और ईतामार से कहा, "तुम लोग अपने सिरों के बाल

मत बिखराओ, और न अपने वस्त्रों को फाड़ो, ऐसा न हो कि तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली पर उसका क्रोध भड़क उठे; परन्तु वह इस्राएल के कुल घराने के लोग जो तुम्हारे भाईबन्धु हैं यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें। 7और तुम लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है।" मूसा के इस वचन के अनुसार उन्होंने किया।

हालांकि कहने के लिए हारून के पास कुछ नहीं था फिर भी इस अध्याय के आरम्भ में रिकॉर्ड की गई इस दुखद घटना ने किसी प्रकार के प्रत्युत्तर की माँग की। इस अध्याय का यह भाग उस प्रत्युत्तर के बारे में बताता है। इसमें उन विद्रोही याजकों की मृत्यु के साथ व्यवहार करने के निर्देश शामिल हैं और याजकीय अधिकार और ज़िम्मेदारियों के विषय में निर्देश शामिल हैं।

आयतें 4, 5. जैसा नादाब और अबीहू अपने अपने पापों के कारण मारे गए, इसलिए जिस किसी को उनके अवशेष छूते हैं वे सब अपवित्र कर दिए जाएँगे। तब उन दो लोगों के शरीरों का क्या किया जाए जिन्हें परमेश्वर ने मार डाला था? हारून और उसके अन्य दो पुत्रों को यह स्वीकृति नहीं थी कि वे उन्हें छूएँ। परिणामस्वरुप **मूसा** ने उनके दो सम्बन्धी, **मीशाएल और एलसाफान** को नियुक्त किया जिससे वे इस समस्या का निवारण करें। उन्होंने इन दो याजकों को **छावनी के बाहर** गाड़ दिया, जहाँ पर उनके शरीर परमेश्वर के लोगों को अशुद्ध न कर सकें।

ये लोग हारून के साथ किस प्रकार सम्बन्ध रखते थे? निर्गमन 6 में पायी जाने वाली वंशावली के अनुसार **उज्जीएल**, अम्राम का भाई था (निर्गमन 6:18), अम्राम, हारून का पिता था (निर्गमन 6:20)। इस कारण उज्जीएल **हारून का चाचा** था और हारून के बेटों का पर-दादा था। "मीशाएल और एलसाफान," उज्जीएल के बेटे थे (निर्गमन 6:22) और इस कारण हारून के चचेरे भाई थे, जो नादाब और अबीहू का पिता था (निर्गमन 6:23)। लैव्यव्यवस्था 10:4 में दिया गया शब्द **सम्बन्धी** और 10:6 में दिया गया शब्द "भाईबन्धु" एक इब्रानी शब्द का अनुवाद करते हैं जिसका अर्थ है "भाई।"

आयत 6. जो याजक मार डाले गए उनके शरीरों के साथ जो कुछ हुआ उसके बारे में विवरण देने के बाद लेखक ने यह प्रकट किया कि कौन इसके लिए शोक कर सकता है और कौन शोक नहीं कर सकता। मात्र **हारून** और उसके बाकी **बेटों** को ही मृत बेटों और भाइयों को गाड़ने के लिए मना नहीं किया गया परन्तु उनसे यह भी कहा गया कि वे उनके लिए शोक न करें। उन्हें इतनी भी स्वीकृति नहीं मिली कि अपने **सिर** उघाड़ने अथवा अपने **वस्त्रों** को फाड़ने के द्वारा शोक का भाव प्रकट कर सकें। अगर वे नादाब और अबीहू के लिए विलाप करते हैं तो उनके शोक की व्याख्या यह होगी कि वे परमेश्वर के विरोध में होकर पापियों के साथ हो गए हैं। ऐसे विषय में वे उपयुक्त रुप से नादाब और अबीहू के परिणाम में भागीदार होंगे और परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधियों के रुप में **मण्डली** के सम्पूर्ण लोगों को

विनाश के खतरे में डालने वाले बन जाएँगे।

उस समूह में अन्य लोग **इस्राएल के कुल घराने के लोग जो** हारून के **भाईबन्धु थे** उनके लिए यह आवश्यक था कि **वे यहोवा की लगाई हुई आग पर विलाप करें**। निसन्देह यह विलाप इसलिए नहीं था कि जो दो लोग मारे गए उनके लिए शोक प्रकट किया जाए परन्तु इसलिए शोक प्रकट करना था कि परमेश्वर के लोगों ने पाप किया जिसके कारण परमेश्वर को मजबूर होकर उन्हें नष्ट करना पड़ा।

आयत 7. शेष याजकों के लिए, फिर भी, यह आवश्यक था कि वे इस सामान्य विलाप में शामिल न हों। उनके लिए यह आवश्यक था कि वे मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाएँ क्योंकि उनका अभिषेक किया गया था। **यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा हुआ है** का अर्थ है कि याजकीय कार्यालय के लिए उनका पवित्रीकरण किया गया है। वर्तमान काल (तेल तुम पर लगा हुआ "है") सम्भावित रुप से ऐसा सुझाता है कि वहाँ पर जो याजक थे उनका अभिषेक किए हुए अधिक समय नहीं हुआ था।[8] जैसा कि उनका पवित्रीकरण किया गया था इसलिए शोक करने वाले लोगों के साथ शामिल होने का अर्थ था मृत्यु का दण्ड प्राप्त करना। शेष याजक और लोग **मूसा के शब्दों** के प्रति आज्ञाकारी बने रहे।

याजकों के लिए निर्देश (10:8-15)

[8]फिर यहोवा ने हारून से कहा, [9]"जब जब तू या तेरे पुत्र मिलापवाले तम्बू में आएँ तब तब तुम में से कोई न तो दाखमधु पीए हो न और किसी प्रकार का मद्य, कहीं ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में यह विधि प्रचलित रहे, [10]जिससे तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको, [11]और इस्राएलियों को उन सब विधियों को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उनको बता दी हैं।" [12]फिर मूसा ने हारून से और उसके बचे हुए दोनों पुत्र ईतामार और एलीआज़ार से भी कहा, "यहोवा के हव्य में से जो अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास बिना ख़मीर खाओ, क्योंकि वह परमपवित्र है; [13]और तुम उसे किसी पवित्रस्थान में खाओ, वह यहोवा के हव्य में से तेरा और तेरे पुत्रों का हक़ है; क्योंकि मैं ने ऐसी ही आज्ञा पाई है। [14]परन्तु हिलाई हुई भेंट की छाती और उठाई हुई भेंट की जाँघ को तुम लोग, अर्थात् तू और तेरे बेटे-बेटियाँ सब किसी शुद्ध स्थान में खाओ; क्योंकि वे इस्राएलियों के मेलबलियों में से तुझे और तेरे बच्चों का हक़ ठहरा दी गई हैं। [15]चरबी के हव्यों समेत जो उठाई हुई जाँघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के सामने हिलाने के लिये आया करेंगी, ये भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा की विधि की व्यवस्था से तेरे और तेरे बच्चों के लिये हैं।"

याजकों को आगे के निर्देश उपलब्ध करवाने के द्वारा परमेश्वर ने भी नादाब और अबीहू की असफलता के लिए प्रत्युत्तर दिया - सम्भावित रुप से इसलिए कि जब वे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हैं तब पाप करने से बचे रह सकें। इस अवसर पर दिए गए निर्देश तीन श्रेणियों में आते हैं: निवासस्थान में सेवकाई करते

समय किन कामों को करने की स्वीकृति याजकों को नहीं है (10:8, 9), याजकों को क्या करना आवश्यक था (10:10, 11), और जो कार्य याजक करते थे उसके लिए उन्हें क्या मिलना चाहिए (10:12-15)।

आयतें 8, 9. *किन कामों को करने की स्वीकृति याजकों को नहीं है।* **परमेश्वर** ने स्वयं याजकों को आज्ञा दी कि जब वे मिलापवाले तम्बू में सेवकाई करने के लिए जाएँ तब वे **न तो दाखमधु पीए हो न और किसी प्रकार का मद्य** पीए हुए हों। तीन तथ्य इस नियम के महत्व पर बल देते हैं। (1) यह आज्ञा स्वयं परमेश्वर के द्वारा दी गई। (2) यह आज्ञा इसलिए थी कि यह **सर्वदा की विधि ठहरे**; यह इसलिए नहीं थी कि भविष्य में किसी भी समय इसमें परिवर्तन किया जा सके अथवा इसे रद्द किया जा सके। (3) अनाज्ञाकारिता करने का अर्थ था मृत्यु को निमन्त्रण देना; यह आज्ञा इसलिए दी गई कि याजक **मारे न** जाएँ। यह सम्भावित रुप से यह सुझाएगा कि याजकों की अप्रत्यक्ष मृत्यु का कारण "दाखमधु अथवा और किसी प्रकार के मद्य" का सेवन करना था। फिर भी क्रिस्टोफ़र जे. एच. राइट का दिया गया निष्कर्ष वास्तव में सच है: "यह बहुत समय पहले सुझाया गया कि यह आज्ञा, इसके वर्तमान सन्दर्भ में आने पर, दी गई क्योंकि नादाब और अबीहू ने नशे में पाप किया। ऐसा हो सकता है परन्तु पाठ्य ऐसा नहीं कहता।"[9] बात चाहे जो भी हो, पवित्र-स्थान में कार्य करने के लिए उसमें प्रवेश करने से पहले किया गया मद्यपान याजक के निर्णय लेने की क्षमता को बिगाड़ देता है। यह उसे उपयुक्त रुप से परमेश्वर की आज्ञा को न मानने की ओर लेकर जाएगा और उन गम्भीर आत्मिक कार्यों का मज़ाक उड़ाएगा जिसमें वह शामिल था।

आयतें 10, 11. *याजकों को क्या करना आवश्यक था।* पवित्र-स्थान में कार्य करने के लिए उसमें प्रवेश करने से पहले मद्यपान के लिए की गई मनाही से ऐसा लगता है कि इसे याजकों की ज़िम्मेदारियों के साथ जुड़ा हुआ है। उनके लिए आवश्यक था कि वे इससे दूर रहें जिससे वे दो काम कर सकें: जिससे वे चीज़ों की विभिन्न श्रेणियों के बीच **अन्तर कर सकें** और **इस्राएलियों को** परमेश्वर की **सब विधियाँ सिखा सकें**। सम्भावित रुप से ये आवश्यकताएँ याजक की मुख्य ज़िम्मेदारियों का एक अच्छा सारांश उपलब्ध करवाती हैं।[10] नशे की स्थिति उन्हें इन भूमिकाओं को पूरा करने से रोक देगी।

यह याजक का कार्य था कि वह **पवित्र और अपवित्र में** (अथवा "सामान्य"; NIV) **और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सके**।[11] "पवित्र" का सम्बन्ध प्रभु परमेश्वर के साथ बताते हुए इस शब्द को परिभाषित किया गया। वह सम्पूर्णता में पवित्र (उदाहरण के लिए देखें यशा. 6:3) है; अतः जो कुछ भी प्रभु के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है वह पवित्र है। इस्राएल के लोग परमेश्वर के लोग थे; इस कारण, वे पवित्र लोग थे। मिलापवाले तम्बू को परमेश्वर के लिए पवित्र किया गया; इसलिए वह एक पवित्र "निवासस्थान" था और इसके अन्तर्गत "पवित्र स्थान" और "महा पवित्र स्थान" थे। जब बलियों को परमेश्वर के सम्मुख चढ़ाया जाता था तो वे "पवित्र" अथवा महा "पवित्र" बन जाती थीं।

"शुद्धता," दूसरी ओर, क्रिया विधि की एक स्थिति से जुड़ी हुई थी। परमेश्वर

ने विभिन्न चीज़ों को "पवित्र" अथवा "अशुद्ध" ठहराया। अगर परमेश्वर ने किसी चीज़ को "अपवित्र" बताया तो वह क्रिया विधि के अनुसार "अशुद्ध" थी। अगर परमेश्वर ने किसी चीज़ को "अपवित्र" नहीं कहा तो उसके लिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह तब तक शुद्ध है जब तक कि कुछ ऐसा न हुआ हो जिसके कारण वह क्रिया विधि के अनुसार अशुद्ध कर दी जाए। वह सब कुछ जो "साफ़" था वह "पवित्र" नहीं था; और जो कुछ "अशुद्ध" था उसे पवित्र नहीं किया जा सकता था। अगर कोई "दूषित" (अथवा "सामान्य") अथवा "अशुद्ध" किसी "पवित्र" के सम्पर्क में आ जाता था तो उसका परिणाम था पाप और इसके लिए दण्ड की अपेक्षा की जा सकती थी।

याजकों के लिए आवश्यकता था कि वे इसके बारे में अच्छी प्रकार से जाने; और सही अन्तर कर सकें, उनके लिए यह आवश्यक था कि वे सही सूचना का स्मरण रखें। मद्यपान उनके याजकीय कार्य के इस भाग को करने में उनके लिए बाधा उत्पन्न कर सकता था।

इसके साथ याजकों का कार्य यह था कि वे परमेश्वर के लोगों को वे विधियाँ सिखाएँ जो परमेश्वर ने उनको **मूसा के द्वारा बता दी थी**। यह ज़िम्मेदारी निसन्देह लोगों से सम्बन्धित थी। औसतन इस्राएली "दूषित" और "पवित्र" और "अशुद्ध" और "शुद्ध" के बीच अन्तर कैसे जान सकते हैं? एक इस्राएली को यह सिखाया जाना आवश्यक है और याजकों की यह ज़िम्मेदारी थी कि वे उन विधियों को सिखाएँ। याजकों की भूमिका के बारे में यह सच हमारी समझ को विस्तृत कर देता है। उसका काम मात्र बलिदान चढ़ाना ही नहीं था; उसके लिए यह भी आवश्यक था कि वह परमेश्वर की विधियों का शिक्षक भी बने। यह एक और कारण था जिसके लिए याजक को मद्यपान करने की स्वीकृति नहीं थी। नशे की स्थिति में कोई भी व्यक्ति संतोषजनक रुप से सिखा नहीं सकता।

आयतें 12-15. *जो कार्य याजक करते थे उसके लिए उन्हें क्या मिलना चाहिए।* मद्यपान के विरुद्ध याजकों को चेतावनी देने और उनकी भूमिका के बारे में समझाने के बाद मूसा ने यह प्रकट किया कि विश्वासयोग्य सेवा करने पर याजकों को किस प्रकार का प्रतिफल प्राप्त होगा। इस समय पर ये निर्देश देने का चुनाव करने के पीछे उसके पास अच्छे कारण रहे होंगे। याजक के काम में शामिल खतरों को स्पष्ट रुप से देखने पर हो सकता है कि हारून के बेटे यह सोच रहे हों कि क्या इस कार्य में आगे बढ़ना चाहिए। एक अलग सम्भावना यह है कि इस समय पर ये विधियाँ दी गईं जिससे याजकों को उत्साहित किया जा सके कि वे अपने काम को निरन्तर जारी रखें। नादाब और अबीहू की मृत्यु के बाद सम्भावित रुप से वे दिए हुए अपने कामों को करने के प्रति अनिच्छा से भरे हुए थे - और इन ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी यह थी कि बलिदानों में से एक भाग को खाएँ। सम्भावित रुप से लेखक ने इस बिन्दू पर उपदेश देने के काम को शामिल करने का चुनाव किया क्योंकि यहाँ दिए गए उपदेश ने याजकों के आहार के साथ व्यवहार किया और जो घटना 10:16-20 में घटती है वह याजकों के खाने से संबंधित है।[12] इस भाग में दिए गए निर्देश क्या थे?

अन्न बलि के विषय में **मूसा** ने **हारून** और उसके **बचे हुए** दोनों पुत्र **ईतामार और एलीआज़ार** से कहा कि याजकों का यह विशेष अधिकार है कि वे वेदी पर जलाए गए मुट्ठी भर भाग के अतिरिक्त सम्पूर्ण **अन्न बलि** को **खाएँ** (10:12, 13)। फिर भी, जैसा कि वह बलि **बहुत ही पवित्र** थी इसलिए इसे **एक पवित्र स्थान** में खाया जाना आवश्यक था। मूसा ने यह स्पष्ट किया कि इसे **वेदी के पास** खाया जाए। मूसा ने याजकों को सुनिश्चित किया कि वे इस अन्न बलि को खा सकते हैं क्योंकि यह उनका **भाग** है और इसको खाने का उनके पास अधिकार है; और यह स्वयं प्रभु है जिसने उन्हें यह अधिकार दिया। अतः याजकों के लिए यह आवश्यक था कि प्रतिदिन इस्राएली जो अन्न बलि लाते थे उसमें से भोजन का एक निश्चित भाग प्राप्त करें; परन्तु उन्हें इसमें से खाना आवश्यक था और उनसे यह अपेक्षा की गई कि वे इसे सही स्थान में खाएँ।

मेलबलियों के रुप में बलि किए गए पशुओं की **छाती** और **जाँघ** के प्रति भी याजक को अधिकार दिया गया था। (10:14, 15)। ये बलिदान **हिलाए जाने के बलिदान[**नों] के रुप में जाने जाते हैं क्योंकि उन्हें पहले हिलाया जाता था अथवा ऊँचा उठाया जाता था जिसका अर्थ यह था कि उन्हें बलि करने वाला याजक एक क्रियाविधि पूरी कर रहा है जिसमें बलिदान को इस प्रकार हिलाने अथवा ऊँचा उठाने से यह संकेत प्राप्त होता था कि यह परमेश्वर को दिया गया है। तब पशु का अधिक शेष भाग आग के द्वारा वेदी पर चढ़ाया जाता था और याजक को यह स्वीकृति थी कि वह पशु के भागों को किसी भी **पवित्र स्थान** में खाए (न कि वह इसे मात्र "एक पवित्र स्थान" में ही खाए) जो उसके लिए निर्धारित थे (छाती और जाँघ)। वह उस माँस को परिवार के अन्य लोगों में बाँट सकता था; इसका उपभोग मात्र याजकों तक ही सीमित नहीं था। एक बार फिर याजकों को यह सुनिश्चित किया गया कि मेलबलियों के इन भागों के प्रति उन्हें अधिकार प्राप्त है क्योंकि स्वयं प्रभु ने यह आज्ञा दी थी। अनेक मेलबलियाँ चढ़ाई गई होंगी; याजकों को इस कारण अन्न बलियों में से प्राप्त होने वाली रोटी के साथ-साथ माँस में से खाने के लिए सुनिश्चित किया गया।

इन निर्देशों ने यह स्पष्ट किया कि जिस समय याजकीय कार्यालय में गम्भीर ज़िम्मेदारियाँ शामिल थी इसके साथ-साथ यह बड़ा प्रतिफल भी शामिल है। जैसा कि लोग परमेश्वर के लिए बलिदान लाया करते थे इसलिए जो याजक उनकी सहायता करते थे वे सही प्रकार से तृप्त किए जाएँगे।

दूसरी असफलता: पापबलि को बिना खाए छोड़ देना (10:16-20)

16फिर मूसा ने पापबलि के बकरे की खोज-बीन की, तो क्या पाया कि वह जलाया गया है। इसलिये एलीआज़ार और ईतामार जो हारून के पुत्र बचे थे उनसे वह क्रोध में आकर कहने लगा, 17"पापबलि जो परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हें इसलिये दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म का भार अपने पर उठाकर उनके लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करो, तुम ने उसका मांस पवित्रस्थान में क्यों

नहीं खाया? [18]देखो, उसका लहू पवित्रस्थान के भीतर तो लाया ही नहीं गया, नि:सन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के अनुसार उसके मांस को पवित्रस्थान में खाते।" [19]इसका उत्तर हारून ने मूसा को इस प्रकार दिया, "देख, आज ही उन्होंने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के सामने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ी हैं! इसलिये यदि मैं आज पापबलि का मांस खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती?" [20]जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ।

यह अध्याय आगे और एक घटना का रिकॉर्ड प्रदान करता है जिसमें याजक शामिल हैं। फिर से यह घटना बताती है कि वे वह कार्य करने में असफल रहे जो उन्हें करना था। इस घटना में याजकों की असफलता के बारे में अजीब बात यह है कि परमेश्वर ने नादाब और अबीहू के समान उन्हें मारा नहीं। इससे पहले कि यह प्रश्न पूछा जाए "ऐसा क्यों है," इसका उत्तर दिया जा सकता है और इसके लिए यह समझना आवश्यक है कि वहाँ पर उस समय क्या हुआ था।

आयत 16. जैसे ही घटना का आरम्भ होता है **मूसा ने पापबलि के बकरे की ध्यानपूर्वक खोज-बीन की** परन्तु उसे न पाया। यह "पापबलि" क्या थी? यह बताया नहीं गया है। कुछ लोग "पापबलि के बकरे" को लोगों की बलि के रुप में देखते हैं जैसा 9:15 में बताया गया है। अगर ऐसी बात है तो अध्याय 10 की घटनाएँ, अध्याय 8 और 9 में बताई गई पवित्रीकरण/अभिषेक की प्रक्रिया की समाप्ति के बाद घटी या उसी दिन घटी। कुछ अन्य लोग इस स्थिति में शामिल "पापबलि" की व्याख्या मात्र एक ऐसी बलि के रुप में करते हैं जो इस्राएली लोगों के द्वारा उनके पापों की क्षमा के लिए प्रतिदिन लायी जाती थी।

पापबलि के लिए ठहराई हुई विधि इस प्रकार कहती थी कि बलि किए गए पशु का एक भाग याजकों को खाने के लिए दिया जाए (6:26, 30) और शेष को वेदी पर जला दिया जाए। जब मूसा ने उस भाग को देखा जो याजकों के द्वारा खाया जाना चाहिए तो उसने पाया कि **वह जलाया गया है!** मूसा ने **हारून के बचे रहे बेटों**, **एलीआज़ार और ईतामार** को क्रोध के साथ प्रत्युत्तर दिया।

आयतें 17, 18. मूसा निसन्देह दुःखी था क्योंकि उसके द्वारा जो परमेश्वर के निर्देश दिए गए थे उनका पालन नहीं किया गया था। उसने सम्भावित रुप से अनुमान लगाया होगा कि जिस परमेश्वर ने नादाब और अबीहू को ऐसा मारा कि वे मर गए वह सम्भावित रुप से फिर से वार करने के लिए तैयार हो - और इस बार वह हारून के बचे रह गए बेटों पर वार करेगा। मूसा की ज़ोरदार डाँट एलीआज़ार और ईतामार के द्वारा **पवित्र स्थान में पापबलि को खाने में** असफलता पर केन्द्रित थी। उसका क्रोध इस सच्चाई के प्रति प्रतिक्रिया रही होगी कि उसके निर्देशों का पालन नहीं किया गया और इस सच्चाई के लिए प्रतिक्रिया रही होगी कि पापबलि के द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले पश्चात्ताप के प्रति याजकों के द्वारा बलि में से खाना संकटपूर्ण है। जैसा परमेश्वर ने याजकों को पापबलि दी थी कि वे मण्डली के **अधर्म का भार अपने पर उठाकर** उनके लिये **यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करें**, इसलिए जब तक याजक पापबलि में से अपना भाग नहीं खाते तब

तक प्रायश्चित की प्रक्रिया अपूर्ण थी।[13] इस कारण बताए गए स्थान में इसे खाने में असफल होने का अर्थ था कि लोगों के पाप क्षमा नहीं किए गए हैं। मूसा के दृष्टिकोण से याजकों की असफलता पापपूर्ण थी।

आयत 19. अपने बेटों की रक्षा में **हारून** ने प्रत्युत्तर दिया, **देख, आज ही उन्होंने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के सामने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ी हैं! इसलिये यदि मैं आज पापबलि का मांस खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती?**

उसके प्रत्युत्तर की व्याख्या अनेक प्रकार से की जा सकती है। जब उसने उस दिन की परिस्थितियों की ओर संकेत किया तब वह शायद यह कहते हुए इस सच्चाई को प्रस्तुत कर रहा था कि उसके दो पुत्र परमेश्वर के सम्मुख मर गए थे और वह दुःखी है और इस विषय पर चिन्तित है कि पापबलि को सही मन के साथ खाया जा सके। इस कारण उसने उसमें से नहीं खाया जिससे परमेश्वर का क्रोध शान्त किया जा सके।

सम्भावित रुप से उसने सोचा कि नादाब और अबीहू के पाप ने उसे पापबलि खाने के लिए अयोग्य बना दिया है। उसने सम्भावित रुप से यह माना कि अगर इन दो पापियों का पिता उसी दिन पवित्र भोजन में खाए तो उससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होगा। उस स्थिति में तब उसके न खाने का निर्णय सम्भावित रुप से नम्रता का एक चिन्ह रहा होगा जो कि एक प्रकार का प्रायश्चित है।

आयत 20. अपने निवेदन के पीछे हारून का कहने का जो भी अर्थ रहा हो फिर भी उसने मूसा को अपनी अच्छी मनसा के लिए कायल कर लिया। पाठ्य कहता है, **जब मूसा ने यह सुना तब उसे संतोष हुआ**। मूसा के द्वारा लगाए जाने वाले दोषों का प्रत्युत्तर दे दिया गया था और वह सन्तुष्ट हो गया।

जब नादाब और अबीहू मार डाले गए तो इस घटना को अनदेखा क्यों कर दिया गया? एक सच्चाई को याद रखा जाना चाहिए कि नादाब और अबीहू के मामले में परमेश्वर ही न्यायी था, वह ही अन्तिम न्याय करने वाला और दण्ड देने वाला परमेश्वर है। इस कारण पाठक इस बात को मान सकता है कि मृत्यु प्राप्त करने के योग्य पाप किया गया था। दूसरे मामले में मूसा वह व्यक्ति था जिसने क्रोध किया। मूसा, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता और प्रतिनिधि था और उसके द्वारा नियुक्त किया हुआ अगुवा था परन्तु वह भी शत-प्रतिशत सिद्ध नहीं था; उसने भी पाप किया। परिणामस्वरुप हम यह निश्चित नहीं कर सकते कि इस अध्याय में दूसरी बार की असफलता के लिए उसके द्वारा किया गया विचार परमेश्वर के दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर रहा था। जैसा परमेश्वर ने उन लोगों को मृत्यु के द्वारा नष्ट नहीं किया जो पापबलि खाने में असफल रहे इसलिए पाठक इस बात में निश्चिन्त हो सकता है कि उनके द्वारा किया गया पाप (अगर वह पाप था) इस योग्य नहीं था कि इसके लिए मृत्यु का दण्ड दिया जाए।

नादाब और अबीहू के पाप में और विधि की माँग के अनुसार पापबलि में से खाने में याजकों की असफलता के मध्य क्या अन्तर था? एक सम्भावना यह है कि दूसरी असफलता वास्तव में पाप नहीं थी। आर. लेअर्ड हैरिस ने यह निष्कर्ष दिया

की इसमें कोई पाप शामिल नहीं था। उसने लिखा,

> अनियमितता कोई लापरवाही नहीं थी, न ही यह व्यवस्था की आत्मा का उल्लंघन था। हारून को इस बात के लिए मनाही थी कि वह अपने वस्त्र फाड़ने, अपने बाल काटने जैसे शोक के साधारण चिन्हों के द्वारा अपने याजकीय कार्यालय को अशुद्ध न करे परन्तु अपने शोक के दिन उपवास रखना बहुत ही पर्याप्त था।[14]

इस प्रकार भी तर्क-वितर्क किया जा सकता है कि जैसा मूसा (परमेश्वर का प्रतिनिधि) ने हारून के स्पष्टीकरण को स्वीकार किया (REB एसा कहती है कि मूसा ने "यह विचार किया कि हारून सही है"), और जैसा कोई संकेत नहीं दिया गया है कि याजक अपनी असफलता पर पश्चात्ताप के लिए पापबलि चढ़ाएँ इसलिए इसमें कोई पाप शामिल नहीं है।[15]

एक दूसरी सम्भावना यह है कि हारून के पुत्रों ने वास्तव में पाप किया परन्तु मूसा (जो परमेश्वर की ओर से कार्यशील था) ने उनके पाप को अनदेखा करने का चुनाव दिया। डोन डिवेल्ट के अनुसार हारून ने सबसे पहले यह कहते हुए स्वयं की सुरक्षा की कि उसने और उसके पुत्रों ने व्यवस्था के अनुसार उस दिन के लिए होमबलि और पापबलि चढ़ाए; फिर भी उसने उस समय "अपनी कमी को मुक्त रुप से स्वीकार किया परन्तु जो उनके साथ हुआ था उसके लिए धीरज और दया प्राप्त करने के लिए निवेदन किया।" उसने कहा "उसने और उसके पुत्रों ने मण्डली के पापों का भार उठाने के लिए उस समय की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी में भाग लेने के लिए स्वयं को अयोग्य महसूस किया है।"; उन्होंने स्वयं को "लक्ष्य के अनुसार काम पूरा करने वाले के रुप में नहीं देखा।"[16] याजकों के कामों में "कमी" के बारे में बताना यह घोषणा करना था कि वे पाप के दोषी हैं - कम-से-कम चूक हो जाने के पाप के दोषी होना। स्पष्ट रुप से अगर उनके द्वारा खाने में असफल होना पाप था तब भी परमेश्वर ने इसे नादाब और अबीहू के पाप के समान गम्भीर नहीं माना।

सम्भावित रुप से इस पद को समझने का सबसे अच्छा तरीका है कि यह कल्पना की जाए कि मूसा सही था और हारून और उसके पुत्रों ने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा। उस स्थिति में ये दोनों असफलताए "जानबूझकर" किए गए पाप (अथवा विद्रोही पाप) और "अनजाने" में किए गए पाप के बीच अन्तर का विवरण देता है।[17] नादाब और अबीहू का पाप जानबूझकर किया गया था जो अभिमानी होकर किया गया और परमेश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध तीव्रता से बलवा करते हुए किया गया।[18] दूसरा पाप अनजाने में किया गया, वह गलती से हो गया और कमज़ोरी के क्षणों में हो गया। परमेश्वर उन लोगों के प्रति अनुग्रहकारी था जिन्होंने अनजाने में पाप किया; उन्हें क्षमा किया जा सकता है। इसके अन्तर में निडर होकर, जानबूझकर किए गए पाप के लिए कोई क्षमा नहीं थी। इस प्रकार के पापों का परिणाम था मृत्यु प्राप्त करना, जैसा नादाब और अबीहू का दण्ड विवरण देता है।

लैव्यव्यवस्था 10 की समाप्ति बलिदान की व्यवस्था (अध्याय 1-7) और

याजकीय कार्यालय (अध्याय 8-10) का निकटता के साथ उद्घाटन करता है। अध्याय 10 की हिला देने वाली घटनाओं ने इस्राएलियों को तैयार किया जिससे वे परमेश्वर के पवित्र किए हुए परन्तु अब ताड़ना पाए हुए याजकों के द्वारा सिखाए जा सकें।

अनुप्रयोग

पाप करने के प्रति हमारी प्रवृति (अध्याय 10)

सम्पूर्ण बाइबल में मनुष्य के कार्य पाप करने की प्रवृति प्रकट करते हैं। "बहुत अच्छे" प्रकार से रचे जाने और सिद्ध वातावरण में रखे जाने के बाद भी आदम और हव्वा ने पाप करने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया और परिणामस्वरुप दण्डित किए गए। परमेश्वर के द्वारा रचे गए संसार में रहते हुए और प्रकृति में परमेश्वर की भलाई के लाभों के द्वारा आशीषित होने के बाद भी नूह के दिनों में मानवजाति ने ऐसे पापी बनने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया जिनके लिए कोई निवारण नहीं था; और वे नष्ट कर दिए गए! परमेश्वर के द्वारा मिस्री गुलामी से छुड़ाए जाने और भोजन, पानी और सुरक्षा प्राप्त करने के बाद भी इस्राएलियों ने एक सोने का बछड़ा बनाने और उसकी पूजा करने के द्वारा प्रत्युत्तर दिया; और परिणामस्वरुप वे दण्डित किए गए। परमेश्वर के द्वारा खिलाने के बाद और सुरक्षा प्रदान करने के बाद भी जंगल से होकर कनान की ओर बढ़ते हुए इस्राएलियों ने परमेश्वर की योग्यता में विश्वास की एक अजीब कमी निरन्तर प्रकट की और ऐसा विचार रखा कि क्या वह उन्हें वायदे का देश दे सकेगा। परिणामस्वरुप उन्हें तब तक जंगल में भटकने का दण्ड मिला जब तक एक सम्पूर्ण वंश समाप्त नहीं हो गया। नए नियम में हम हनन्याह और सफीरा का उदाहरण पाते हैं। हालांकि कलीसिया का आरम्भ होने के बाद उन्होंने पहले मसीही लोगों के समूह के लोग होने की आशीष पाई और अपने पापों के लिए क्षमा प्राप्त की फिर भी उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और इसके परिणामस्वरुप मार डाले गए।

लैव्यव्यवस्था 10 की कहानी में याजकों का अभिषेक किया गया और उन्होंने बड़े आदर का एक पद प्राप्त किया। फिर भी दो याजकों ने पाप किया और मार डाले गए। बाइबल की कहानी में एक स्थिर बात यह देखने को मिलती है कि परमेश्वर के द्वारा अनेक प्रकार से आशीष पाने के बाद भी मानवजाति की प्रवृति पापमय है। बाइबल को समझ के साथ पढ़ने से एक व्यक्ति की घमण्ड करने की प्रवृति दूर हो जाए और बाइबल उसे इसके लिए कायल करे कि वह स्वयं की जाँच करे जिससे वह स्वयं के पापी होने के बारे में जान सके।

सीखने के लिए पाँच पाठ (10:1-3)

लैव्यव्यवस्था 10:1-3 ईश-विद्या से जुड़ी हुई अनेक महत्वपूर्ण सच्चाइयों के बारे में सिखाती है। आइए ऐसे पाँच सिद्धान्तों पर निकट दृष्टि डालें जो इस पाठ्य

में देखे जा सकते हैं।

परमेश्वर के लोगों के अगुवे अविश्वसनीय हैं। मूसा के काल के अन्तर्गत रहे याजक कमज़ोर थे और इस कारण पाप में गिर सकते थे और वे पाप में गिर भी गए। हारून के याजकीय कार्यालय की असफलता इस बात की साक्षी है कि अब भी एक और याजक की आवश्यकता है। वर्तमान में मसीही लोगों के पास यीशु मसीह के व्यक्ति रुप में एक महायाजक है! वह एक सिद्ध याजक है, एक ऐसा जन जिसमें कोई दोष नहीं है और जिसने कभी पाप नहीं किया। वह हारून की पीढ़ी से नहीं उतरा परन्तु मेलकीसेदेक के समान याजक ठहरा। वह लेवी के वंश के अनुसार शारीरिक वंश के द्वारा याजक नहीं बना परन्तु एक पापरहित और अविनाशी जीवन के सामर्थ के द्वारा याजक बना (इब्रा. 5:1-10; 7:1-8:2)।

आज्ञाकारिता आवश्यक है। परमेश्वर ने सदैव मानवजाति के प्रति अपना प्रेम और तरस दिखाया है परन्तु बदले में उसने अपने लोगों से आज्ञाकारिता की माँग की। फिर, उसने सदैव अनाज्ञाकारिता को दण्ड दिया है। अनेक कारकों के द्वारा सम्भावित रुप से नादाब और अबीहू का पाप उत्तेजित किया गया परन्तु यह एक ऐसा पाप था जो दण्ड पाने के योग्य था क्योंकि इसमें अनाज्ञाकारिता शामिल थी। उन्होंने "परमेश्वर के सम्मुख ऊपरी आग चढ़ाई जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी थी" (10:1)। इसी प्रकार इस नए नियम युग में परमेश्वर अपनी इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता चाहता है (मत्ती 7:21-24; रोमियों 6:17, 18; 2 थिस्स. 1:6-9; इब्रा. 5:8, 9)।

नई विधियाँ निकालना विषम हो सकता है। नादाब और अबीहू के वृतान्त हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर के निर्देशों का सटीक पालन न करना, यह मान लेना कि जो हमें पसन्द है उसे लागू कर देना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य होगा, चाहे उसने हमसे कुछ और की माँग की हो, विषम हो सकता है। रिचर्ड एन. बौएस ने लिखा, "नादाब और अबीहू की कहानी हमें विशेषतया आराधना की उन विधियों के विरुद्ध सचेत करती है, जिनका यहोवा ने विशिष्ट उल्लेख नहीं किया है।"[19]

आराधना के विषय परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन होना चाहिए। बाइबल सिखाती है कि नैतिकता और आचरण संबंधी परमेश्वर की माँगें महत्वपूर्ण हैं, परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि आराधना के संबंध में उसकी माँगें महत्वपूर्ण नहीं हैं। नादाब और अबीहू को इसलिए नहीं मार डाला गया क्योंकि उन्होंने किसी को दुःख पहुंचाया था या वे न्यायपूर्ण व्यवहार करने में असफल रहे थे; उन्हें इसलिए मार डाला गया क्योंकि मिलापवाले तम्बू में आराधना के विषय परमेश्वर जो चाहता था वे उसे पूरा करने में असफल रहे थे। इसी प्रकार से, यीशु का कथन कि हमें "आत्मा" तथा "सच्चाई" में परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना 4:24) का अर्थ है कि आज भी लोग उसकी आराधना करने के विषय उसके निर्देशों का पालन करें।

परमेश्वर की पवित्रता की माँग है कि वह बुराई करने वालों को दण्ड दे। मूसा ने, नादाब और अबीहू की मृत्यु का स्पष्टीकरण देते हुए कहा, प्रभावी रीति से, उनको इसलिए दण्डित किया गया क्योंकि परमेश्वर को अपनी पवित्रता को

प्रदर्शित करना था। एक पवित्र परमेश्वर पापमय व्यवहार को सहन नहीं कर सकता है। विशेषतया, वह अपने पवित्र स्थान तथा अपनी उपस्थिति को "ऊपरी" (इस कारण अपवित्र) आग द्वारा दूषित नहीं होने दे सकता था। जब परमेश्वर की पवित्रता अपमानित होती है, तब उसका पवित्र स्वभाव दोषी को दण्ड देने के द्वारा प्रतिक्रिया देता है। जो परमेश्वर को केवल प्रेमी और दयालु ही देखते हैं उन्हें इस बात को समझना चाहिए कि सृष्टि के सर्वोच्च शासक का एक दूसरा पहलू भी है - एक ऐसा पहलू जो उसकी पवित्रता को अनदेखा करने के प्रलोभन में पड़ने वालों को भय से कंपकंपा दे। पौलुस ने कहा "इसलिये परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख!" (रोमियों 11:22; KJV)। न केवल परमेश्वर भला है; वरन उसकी पवित्रता की माँग है कि वह कठोर भी हो।

परमेश्वर का आज्ञाकारी होना (अध्याय 10)

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया, तो उसने उन्हें पवित्र जाति होने के लिए बुलाया। उसने उन्हें एक निवास स्थान बनाने की आज्ञा दी, और फिर उन्हें पवित्र होने के लिए क्या करना है, यह सिखाने के लिए लैव्यव्यवस्था में पाए जाने वाले निर्देश दिए। "पवित्र जाति" होने के लिए उन्हें लहू से शुद्ध किए गए लोग होना था, जो अशुद्धता से शुद्ध किए गए हों, जो नियमित आराधना करते हों, जो परमेश्वर को बलिदान चढ़ाते हों, और जो सभी के साथ प्रेम का व्यवहार करते हों।

इन आवश्यकताओं को एक अंतिम व्यापक निर्देश में संक्षिप्त किया जा सकता है: परमेश्वर की पवित्र जाति होने के लिए इस्राएल को परमेश्वर का आज्ञाकारी होना था। लैव्यव्यवस्था 19:37 इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है: "इसलिये तुम मेरी सब विधियों और सब नियमों को मानते हुए निरन्तर पालन करो; मैं यहोवा हूं" (देखिए 18:4, 5)। आज्ञाकारिता की अनिवार्यता का यह कथन उस बात को दोहराता है जो परमेश्वर ने इस्राएल से तब कही थी जब उसने सर्वप्रथम उनके साथ वाचा बांधी थी: "इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे ... और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे" (निर्गमन 19:5, 6)।

इस विषय में, जैसे कि अन्य विषयों में, आज परमेश्वर के लोगों - आत्मिक इस्राएल, कलीसिया को - वही करना है जो तब परमेश्वर के लोगों को करना था। हमें भी परमेश्वर का आज्ञाकारी होना है। यीशु ने कहा, "जो मुझ से, 'हे प्रभु!, हे प्रभु!' कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती 7:21)।

लैव्यव्यवस्था अनाज्ञाकारिता के दो उदाहरण दर्ज करने के द्वारा, आज्ञाकारिता की अनिवार्यता देखने में पाठकों की सहायता करती है। हम इन उदाहरणों से सीख सकते हैं कि परमेश्वर की माँग है कि हम उसके आज्ञाकारी हों।

अनाज्ञाकारिता: एक ईशनिन्दा करने वाला

अनाज्ञाकारिता का एक उदाहरण लैव्यव्यवस्था 24:10-23 में मिलता है। एक मिस्री पुरुष और इस्राएली स्त्री का पुत्र "यहोवा के नाम की निन्दा कर के शाप देने लगा।" उसे मूसा के सामने लाया गया, और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस्राएल की "सारी मण्डली" द्वारा पत्थरवाह किया जाए। यह घटना दर्ज किए जाने योग्य महत्वपूर्ण क्यों थी?

प्रथम, इससे प्रगट हुआ कि इस्राएलियों को कैसे ज्ञात हुआ कि अनाज्ञाकारियों के साथ क्या करना था। कुछ पापों का दण्ड तो पहले से ज्ञात था, परन्तु प्रत्यक्षतः, परमेश्वर ने पहले यह स्पष्ट नहीं किया था कि उसके साथ क्या किया जाना है जो उसके नाम की निन्दा करे, चौथी आज्ञा का उल्लंघन करे: "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा" (निर्गमन 20:7)। परमेश्वर ने कहा था कि वह नियमों का उल्लंघन करने वाले ऐसे किसी व्यक्ति को बिना दण्ड पाए जाने नहीं देगा। अभी तक व्यवस्था में इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था, इस लिए जिन इस्राएलियों ने उस व्यक्ति को निन्दा करते सुना था उन्होंने उसे उस समय तक के लिए "हवालात" में रखा जब तक मूसा यहोवा से पता न कर ले कि ईशनिन्दा करने वाले को क्या दण्ड देना है। परमेश्वर का अपने लोगों को प्रत्युत्तर था कि ईशनिन्दा करने वाले को पथराव करके मार डाला जाए (देखें गिनती 15:32-36)।

इसके अतिरिक्त, यह उदाहरण इस्राएलियों के लिए दो सत्य चित्रित करता था। (1) परमेश्वर की इच्छा थी कि उसकी आज्ञाओं का पालन हो। वह अपने लोगों के प्रति कृपालु, प्रेमी और दयालु था; परन्तु यदि वे उद्दण्डता सहित उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करते, तो वह उन्हें दण्ड दे सकता था और देता भी था। वरन वह ऐसा करने के लिए बाध्य था, क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है। इस व्यक्ति ने अतिरिक्त प्रमाण प्रदान किया कि जो उसके प्रति उद्दण्ड होंगे, परमेश्वर उनके प्रति कठोर और पलटा लेने वाला बनेगा, जैसे कि वह उनके प्रति अनुकंपा से भरा रहता है जो अपने आप को उसे समर्पित करते हैं। (2) जो भी परमेश्वर की वाचा के अधीन लोगों के साथ रहता था उसे वाचा की व्यवस्था का पालन करना था, केवल आंशिक इस्राएली (लहू के द्वारा) होने के नाते कोई इससे बच नहीं सकता था। जिस मनुष्य को पथराव किया गया, क्योंकि उसका पिता मिस्री था उसने सोचा होगा कि, "क्योंकि मैं पूर्णतः इस्राएली नहीं हूँ, इसलिए मुझे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने से छूट है। इस लिए मैं इस्राएल के परमेश्वर के बारे में जो चाहे कहा सकता हूँ।" वह गलत था! मूसा के प्रश्न के उत्तर में परमेश्वर ने विशेषतया कहा कि चाहे "देशी" हो या "परदेशी" ईशनिन्दा के लिए दोनों ही को मृत्यु-दण्ड दिया जाए (24:16)। फिर उसने आगे व्यक्तिगत चोट पहुँचाने और हत्या से संबंधित नियमों के संबंध में कहा "तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं" (24:22)। वे गैर-इस्राएली, जो इस्राएलियों के साथ रहने का चुनाव करते, उन्हें भी उन ही नियमों के अन्तर्गत

रहना था जिनके अन्तर्गत इस्राएली रहते थे।

इस परिच्छेद से एक मूल्यवान शिक्षा ग्रहण की जा सकती है: हमें यहोवा का नाम व्यर्थ में कदापि नहीं लेना चाहिए। वर्तमान समय में ईशनिन्दा की, परमेश्वर के नाम को व्यर्थ में, हलके में, और निरर्थक रीति से लेने - यहाँ तक कि अपशब्द कहने में उसका प्रयोग करने की बाढ़ सी आ गई है। कदाचित ही कोई चलचित्र या टीवी कार्यक्रम ऐसा हो जिसमें परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेते हुए न सुना जाए। वास्तव में, बहुत ही दुर्लभ है कि बाहर समाज में निकलें और लोगों को शपथ लेते न सुनें, और परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग न कर रहे हों। हम व्यवस्था के अधीन तो नहीं हैं, परन्तु एकमात्र सच्चे परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग करना अभी भी पाप है। इस पाप के लिए अब मृत्यु-दण्ड तो नहीं है; परन्तु हम इस बात के लिए निश्चित रह सकते हैं कि परमेश्वर, जो सारे जगत का महान न्यायी है, वह इस बात का ध्यान करता है और जो इस प्रकार उसके नाम का दुरुपयोग करते हैं उन पर न्याय लाएगा।

इसके अतिरिक्त हमें यह भी सीखना चाहिए, जैसे कि इस्राएलियों ने सीखा, परमेश्वर की इच्छा है कि मनुष्य उसके आज्ञाकारी रहें, और जब ऐसा नहीं होता तब वह उन्हें दण्डित करता है। लोग परमेश्वर के दयालु होने पर बहुत अधिक निर्भर हो सकते हैं। वे सोच सकते हैं कि, "मैं पाप को जानता हूँ, परन्तु परमेश्वर इतना कृपालु है कि अनाज्ञाकारी होने के लिए वह मुझे कभी दण्ड नहीं देगा।" लैव्यव्यवस्था 24 के अनाम ईशनिन्दक से हम बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। परमेश्वर पाप के लिए दण्ड दे सकता है, और देता है। यह सोच कर कि परमेश्वर किसी को दोषी ठहराने से कहीं अधिक दयालु है, हमें जानते-बूझते हुए पाप में नहीं बने रहना चाहिए।

अनाज्ञाकारिता: "ऊपरी आग"

लैव्यव्यवस्था में अनाज्ञाकारिता का एक अन्य उदाहरण अध्याय 10 में मिलता है। अध्याय 8 और 9 याजकीय समर्पण की कहानी बताते हैं। फिर अध्याय 10 में, याजकों के अभिषेक के पश्चात, जो किया गया प्रथम आधिकारिक याजकीय कार्य दर्ज है, वह अनाज्ञाकारिता है। हम 10:1, 2 में पढ़ते हैं कि:

> तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उनमें आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के सामने मर गए।

उन दोनों याजकों ने क्या गलत किया था? प्रति प्रातः और संध्या, मिलापवाले तम्बू के अन्दर, धूप की वेदी पर धूप को जलाया जाना था। धूप की वेदी के लिए "आग" को मिलापवाले तम्बू के बाहर होमबलि की वेदी पर अविरल जलती हुई

रखी जा रही "आग" से ही लिया जाना था (16:12)।[20] नादाब और अबीहू ने इस आज्ञा का उल्लंघन किया और "ऊपरी आग" को अर्पित किया, वह "आग जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी।" दूसरे शब्दों में, वे परमेश्वर द्वारा निर्धारित वेदी के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान से जलते हुए कोएले मिलापवाले तम्बू के भीतर ले आए।[21] परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने स्वर्ग से आग भेजकर उन्हें भस्म कर दिया। वे अनाज्ञाकारी हुए। इस बार यहोवा ने इस्राएलियों को उन्हें पथराव करने को नहीं कहा। उसने स्वयं ही उन्हें मार डाला!

उनकी मृत्यु के बाद मूसा ने विशेष निर्देश दिए। मूसा के कहने का तात्पर्य था कि दोनों अनाज्ञाकारियों को इसलिए मार डाला गया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को आदर नहीं दिया था, और उसके साथ "पवित्र" होने का व्यवहार नहीं किया था (10:3)। उनकी देह को बिना किसी संस्कार के "छावनी के बाहर" दफ़नाया जाना था, संभवतः इसलिए जिससे कि उनके पाप के कारण छावनी दूषित न हो जाए (10:4, 5)। हारून और उसके परिवार जन, बुराई करने वाले मृतक जनों के लिए शोक भी नहीं मना सकते थे; उन्हें मिलापवाले तम्बू के समीप होने को भी नहीं छोड़ना था; अन्यथा वे भी मारे जाते (देखें 10:6, 7)। परमेश्वर ने याजकों के लिए, 10:8-11 में, एक नया नियम दिया: याजकों को मिलापवाले तम्बू में सेवकाई के लिए आने से पहले कोई भी दाखमधु पीए हुए नहीं होना था। उन्हें "पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर" सकने और इस्राएलियों को परमेश्वर की नियम सिखाने योग्य होना था। इस स्थान पर इस नियम के दिए जाने के कारण अनेकों ने यह माना है कि नादाब और अबीहू का एक पाप नशे की स्थिति में पवित्र-स्थान में प्रवेश करना था। ऐसा दोबारा कभी न हो, परमेश्वर ने यह नियम दिया।

परमेश्वर ने नादाब और अबीहू के प्रति उग्र प्रतिक्रिया दी, और अपने लोगों को एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाने के लिए इस घटना को अपनी पवित्र पुस्तक में दर्ज करवाया - अर्थात, उसकी पवित्रता की माँग थी कि वह अपने लोगों की कड़ी आज्ञाकारिता द्वारा आदर पाए। बचने के लिए लोग अनभिज्ञ होने का बहाना नहीं बना सकते थे। वे भली-भांति जानते थे कि परमेश्वर ने किस प्रकार की आग की माँग की थी।

परन्तु अपने व्यवहार के लिए वे अन्य बहाने बना सकते थे। जैसे कि, वे निम्न में से कोई भी तर्क का प्रयोग कर सकते थे:

1. "मुख्य बात यह है कि धूप जलाई जानी थी; हमने वही किया। उसे जलाने के लिए हमें आग कहाँ से मिली, यह महत्वपूर्ण नहीं लगा।"
2. "हम जानते थे कि हमें आग कहाँ से लानी है, परन्तु ऐसा करना बहुत परिश्रम का कार्य था। हमने अपने लिए आग अधिक सुविधाजनक स्त्रोत से ले ली। अवश्य ही, परमेश्वर को हमारे द्वारा अधिक सुविधाजनक और प्रभावी मार्ग को अपनाने की प्रशंसा करनी चाहिए।"
3. "हम जानते थे कि परमेश्वर क्या चाहता है - परन्तु हम यह भी जानते हैं

कि वह प्रेमी और दयालु है! निश्चय ही, वह इस बात को लेकर कठोर नहीं है कि हम *बिलकुल वैसा* ही करें जैसा वह कहता है; और यदि वह ऐसा चाहता भी है, तो भी उसके द्वारा निर्धारित आग से भिन्न आग चढ़ाए जाने की एक छोटी सी गलती के लिए वह किसी को दण्ड नहीं देगा!"

वे चाहे जो भी बहाने बनाते, परमेश्वर उन्हें स्वीकार नहीं करता। उन्होंने अनाज्ञाकारिता की थी, और उस अनाज्ञाकारिता का दण्ड था वह भयानक मृत्यु जो स्वयं परमेश्वर ने प्रदान की। इस अवसर पर यहोवा ने अपने आप को आज्ञाकारिता की आशा रखने और माँग करने वाला, और अनाज्ञाकारियों का नाश करने वाला परमेश्वर प्रगट किया।

इस कहानी का परिशिष्ट भाग लैव्यव्यवस्था 10 की अंतिम पाँच आयतों में मिलता है। मूसा को ज्ञात हुआ कि पापबलि के बकरे को याजकों द्वारा पवित्र-स्थान में खाया नहीं गया था, इसलिए उसने क्रोधित होकर बचे हुए दोनों पुत्रों, एलीआज़ार और ईतामार को, पापबलि से संबंधित व्यवस्था की माँग (10:16-18; देखें 6:26, 29) को पूरा न करने के लिए डांटा।[22] हारून ने मूसा द्वारा लगाए गए दोष के लिए यह प्रत्युत्तर दिया: "देख, आज ही उन्होंने अपने पापबलि और होमबलि को यहोवा के सामने चढ़ाया; फिर मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ी हैं! इसलिये यदि मैं आज पापबलि का मांस खाता तो क्या यह बात यहोवा के सम्मुख भली होती?" (10:19)। हारून यह कहता प्रतीत होता है कि उस दिन के अनुभवों - अनाज्ञाकारिता के कारण उसके दो जेठे पुत्रों की मृत्यु - के पश्चात, उसे संदेह था कि पापबलि के याजकीय भाग को खाना उचित होता। संभवतः वह यह कह रहा था, "आज मेरे पुत्रों में से दो ने पापबलि और होमबलि चढ़ाई; परन्तु वे स्वयं बलि बन गए, अपने पाप के लिए परमेश्वर द्वारा भस्म कर दिए गए। उनके पाप ने मुझे ऐसा प्रभावित किया है कि मुझे लगता है कि मैं पापबलि को खाने के लिए अयोग्य हूँ। मुझे यह विश्वास नहीं था कि परमेश्वर मेरे द्वारा ऐसा करने को स्वीकार योग्य पाएगा।" हारून का अभिप्राय चाहे जो भी रहा हो, मूसा ने उसके द्वारा पापबलि को नहीं खाए जाने को स्वीकार कर लिया।

इस परिशिष्ट में पाया जाने वाला भला समाचार यह है कि परमेश्वर अपनी प्रत्येक अनाज्ञाकारिता को मृत्यु दण्ड के योग्य नहीं समझाता है। अवश्य ही परमेश्वर ने नादाब और अबीहू के विषय न्याय किया; मूसा ने न खाई हुई बलि के विषय एलीआज़ार और ईतामार का न्याय किया। परमेश्वर के न्याय और मनुष्य के न्याय में अन्तर है। मनुष्य गलती कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर सदा सही होता है!

यदि यह स्वीकार लिया जाए कि इस अवसर पर मूसा ने परमेश्वर का सही प्रतिनिधित्व किया था, तो भी इन दोनों अनाज्ञाकारिताओं में क्या अन्तर था? उत्तर यह है कि, पहली घटना में नादाब और अबीहू ने उद्दण्डतापूर्वक पाप किया था। यह जानते हुए भी कि परमेश्वर उन से क्या चाहता है, उन्होंने जानबूझकर अनाज्ञाकारिता की। दूसरी ओर, हारून ने, या तो धर्मपरायणता (क्योंकि उसने

सोचा कि वह अयोग्य है) या अनभिज्ञता के कारण (क्योंकि वह परेशान और शोकित था) व्यवस्था के निर्देशों का पूर्णतः पालन नहीं किया। जो जानबूझकर उसके अनाज्ञाकारी होते हैं, परमेश्वर उनके प्रति कठोर और अति क्रुद्ध होता है; परन्तु वह उनके प्रति दयालु रहता है जो दुर्बलता या अनजाने में कुछ पल के लिए उसके द्वारा दी गई सभी आज्ञाओं का पालन करने से चूक जाते हैं।

वर्तमान में लोगों की अनाज्ञाकारिता

हमें इन उदाहरणों से, तथा यहोवा के सभी अध्यादेशों एवं नियमों के पालन के विषय सकारात्मक आज्ञाओं से क्या शिक्षा लेनी चाहिए? हमें परमेश्वर का आज्ञाकारी होना सीखना होगा!

धार्मिक होना अच्छा है, परन्तु धार्मिक होना इस बात का निश्चित होना नहीं है कि उद्धार पाएँगे और बचाए भी जाएँगे। मसीह ही उद्धार और बचाए जाने का रचयिता है, उनके लिए जो उसके आज्ञाकारी हैं (इब्रा. 5:8, 9)!

बलिदान कभी भी आज्ञाकारिता का स्थान नहीं ले पाएँ हैं। पुराने नियम में शमूएल भविष्यद्वक्ता ने एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जो आज भी सत्य है:

> शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है (1 शमूएल 15:22)।

परमेश्वर की आराधना करना महत्वपूर्ण है, परन्तु आज्ञाकारिता के बिना आराधना का कोई मूल्य नहीं है।

आज अनेक लोग परमेश्वर के अनाज्ञाकारी रहते हैं। कुछ मसीही बनने के विषय उसकी आज्ञा का पालन करने से इंनकार कर देते हैं। उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए, इसके विषय वे कह सकते हैं, "मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण कीजिए" - जो बाइबल कभी नहीं कहती है। मुख्यतः वे शिक्षा देते हैं कि लोग केवल विश्वास द्वारा ही उद्धार प्राप्त करते हैं। बाइबल सिखाती है कि खोए हुए लोगों को यीशु मसीह में विश्वास लाना है (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से पश्चाताप करें (प्रेरितों 17:30), प्रभु में अपने विश्वास का अंगीकार करें (रोमियों 10:9, 10), और प्राप्त हुई पापों की क्षमा के कारण मसीह में बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38; 10:48; 22:16)। जो भी बचना चाहता है उसे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना होगा। ऐसी आज्ञाकारिता का विकल्प क्या है? जब प्रभु लौट कर आएगा, तो "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्स. 1:7, 8)। प्रभु के लौटने पर नाश होने से बचने के लिए लोगों को सुसमाचार पर विश्वास करना अनिवार्य है!

कुछ आराधना से सम्बन्धित परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने से इनकार करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसकी आराधना "सच्चाई" से भी करें और "आत्मा" से भी करें (यूहन्ना 4:24)। आराधना के विषय हम सत्य को कैसे

जानें? परमेश्वर का "वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)। यदि हमें परमेश्वर की आराधना सत्य सहित करनी होती तो जैसा बाइबल सिखाती है वैसे ही करनी होगी।

अन्य बातों सहित, नया नियम सिखाता है कि प्रथम शताब्दी में कलीसिया की आराधना में संगीत कप्पेला - बिना किसी वाद्य-यंत्रों की संगति के था। प्रारंभिक मसीहियों को, जब वे परमेश्वर की आराधना करते थे तब मनों में गीत गाना और स्तुतिगान करना सिखाया जाता था (इफि. 5:19; देखें कुलु. 3:16)। आज बहुतेरे आराधना में संगीत वाद्य-यंत्रों का प्रयोग करते हैं। वे सोचते होंगे, "यह छोटी सी बात है; परमेश्वर को इसकी परवाह नहीं है कि हम आराधना में संगीत वाद्य प्रयोग करते हैं अथवा नहीं। बाइबल इन वाद्यों के प्रयोग को वर्जित नहीं करती है, इसलिए निश्चय ही गीतों के गाने को और अच्छा करने के लिए वाद्यों को सम्मिलित कर लेने में कुछ गलत नहीं है।"

जो इस प्रकार की सोच रखते हैं उन्हें इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए: क्या परमेश्वर ने निर्धारित किया कि उसे आराधना में किस प्रकार का संगीत चाहिए? यदि उसने कहा, यह कहने के द्वारा कि वह चाहता है कि संत स्तुतिगान करें (जैसा कि नए नियम के समय में मसीहियों द्वारा किए जाने से प्रगट है), तो फिर क्या संगीत वाद्य यंत्रों का प्रयोग परमेश्वर की आराधना में "ऊपरी आग" के प्रयोग किए जाने के समतुल्य नहीं है? ऊपरी आग वह आग थी जिसकी "यहोवा ने आज्ञा नहीं दी" थी। क्या संगीत वाद्य ऐसा संगीत नहीं है जिसकी "यहोवा ने आज्ञा नहीं दी" उसकी आराधना के लिए?

कुछ मसीही परमेश्वर की आज्ञा को मसीही जीवन जीने में पूरा नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, वे जानते हैं कि बाइबल उन्हें आज्ञा देती है कि कलीसिया में एकत्रित होना न छोड़ें (इब्रा. 10:25), परन्तु वे जान बूझकर अपने आप को कलीसिया की सभाओं से अनुपस्थित रखते हैं। (मसीहियों को आराधना सभा में केवल इसलिए नहीं आना चाहिए क्योंकि ऐसी आज्ञा दी गई है, यद्यपि यह आज्ञा तो है। इसलिए, सभा में सम्मिलित होने के लिए हमारे पास चाहे अन्य कोई भी कारण हो, परन्तु हमें इसलिए जाना है क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है।) मसीही इस बात से अवगत हो सकते हैं कि उन्हें औरों के साथ भलाई करनी है, फिर भी उनमें से अनेकों अपने आप में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि वे आवश्यकता में पड़े लोगों की सहायता करने के लिए समय ही नहीं निकालते हैं। मसीहियों को चाहिए कि वे अपने आप को "संसार से निष्कलंक रखें" (याकूब 1:27; KJV); परन्तु हम बहुधा सांसारिक पापमय व्यवहार में पड़ जाते हैं। हमें यह बोध है कि एक महान आज्ञा (मत्ती 28:18-20) हम में से प्रत्येक पर लागू होती है, किन्तु फिर भी हम सुसमाचार को औरों के साथ बाँटने के लिए कोई भी प्रयास करने में विफल रहते हैं। मसीहियों, और गैर-मसीहियों को यह स्मरण रखना चाहिए कि सभी लोगों का न्याय उनके कार्यों के द्वारा किया जाएगा (2 कुरि. 5:10) - उनके आज्ञाकारी रहने या नहीं रहने के द्वारा।

यह कहने में, कि परमेश्वर अनाज्ञाकारियों को दण्डित करता है, समस्या यह

है कि हम सभी अनाज्ञाकारी हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके आज्ञाकारी हों। यह एक सत्य-वचन है; इसकी पुष्टि पवित्र-शास्त्र से की जा सकती है। केवल प्रभु यीशु मसीह ही इस उच्चतम स्तर तक पहुँच सका है। जहाँ तक आज्ञाकारिता की बात है, जो पौलुस ने कहा वह सत्य है: "कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं" (रोमियों 3:12) - या, हम कह सकते हैं, किसी ने भी (यीशु को छोड़) सिद्ध आज्ञाकारिता नहीं की है।

हमारे लिए आज आशा है, परन्तु हमारी आशा हमारे अनाज्ञाकारी होने की, अंगीकार करने, उसके लिए पश्चाताप करने, और परमेश्वर की ओर मुड़कर उसके अनुग्रह उसके निर्धारित मार्ग के द्वारा बचाए जाने से है। यदि हम अपनी अनाज्ञाकारिता से पश्चाताप करें, परमेश्वर अपनी दया में होकर हमें क्षमा करेगा।

उपसंहार

लैव्यव्यवस्था का उद्देश्य इस्राएल को यह सीखने में सहायता देने का था कि पवित्र राष्ट्र कैसे बनना है। उससे, इस विषय में, परमेश्वर के लोगों को जानकारी मिली कि वे लहू द्वारा शुद्ध किए गए हैं और उन्हें अपने मध्य में से अशुद्धता को निकालना है। इसके अतिरिक्त, उन्हें नियमित आराधना करनी थी, बलिदान चढ़ाने थे, और एक दूसरे के प्रति सप्रेम व्यवहार रखना था। ये सभी आवश्यकताएं संक्षेप में इन शब्दों में कही जा सकती हैं: "परमेश्वर के आज्ञाकारी रहो!" यदि लोग उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो वे, वास्तव में वह सब करेंगे जो पवित्र राष्ट्र होने के लिए वह उनसे चाहता है। परमेश्वर का आज्ञाकारी होना उनके पवित्र राष्ट्र का दर्जा पाने और बनाए रखने का आधार था। यही परमेश्वर के अनुमोदन की कुंजी थी। यही आज भी परमेश्वर के अनुमोदन को प्राप्त करने की कुंजी है।

इस्राएलियों के पास परमेश्वर का आज्ञाकारी होने के लिए प्रोत्साहित करने वाला क्या था? इस प्रश्न का एक उत्तर लैव्यव्यवस्था 26 में मिलता है, पुस्तक के अन्त के निकट। उस लेख में, मूसा के माध्यम से, परमेश्वर ने उसके आज्ञाकारी होने के दो कारण दिए। (1) यदि परमेश्वर के लोग उसके आज्ञाकारी होंगे, तो वह राष्ट्र को आशीष देगा। उसने अपनी आज्ञाकारी सन्तान को बहुतायत से वर्षा, अच्छी फसल, बहुतायत से भोजन, दुष्ट जंतुओं से सुरक्षा, शत्रुओं पर विजय, बड़े परिवार, और उसकी उपस्थिति देने की प्रतिज्ञा दी (26:1-13)। (2) इसके विपरीत, यदि उसके लोग उसकी आज्ञाकारी नहीं रहेंगे, तो वह उन्हें श्रापित करेगा। वह उनपर "बेचैनी, और क्षयरोग और ज्वर" भेजेगा (26:16)। वे अपने शत्रुओं द्वारा पराजित किए जाएँगे (26:17)। वह देश पर अकाल भेजेगा (26:19, 20)। वह उन्हें वन पशुओं द्वारा प्रताड़ित करेगा (26:22)। वह उनमें मरी भेजेगा और उनके शत्रुओं के वश में सौंप देगा (26:25)। वह उनके मध्य ऐसी भुखमरी भेजेगा कि उन्हें अपने ही बेटों और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा (26:26-29)। यदि वे आज्ञाकारी होने से फिर भी मना करेंगे, तो परमेश्वर उनके देश को उजाड़ कर देगा, उनके नगरों को सूना कर देगा, और उन लोगों को जाति-जाति के बीच तितर-बितर कर देगा

(26:31-33)।

आज हमें परमेश्वर का आज्ञाकारी क्यों होना है? इन्हीं कारणों के लिए: यदि हम होंगे, तो हम आशीषित होंगे; यदि हम नहीं होंगे तो हम श्रापित होंगे। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम उसी प्रकार आशीषित या श्रापित होंगे जैसे इस्राएल हुआ। मसीही युग में परमेश्वर ने हमें उसकी इच्छा पूरी करने के परिणामस्वरूप भौतिक आशीषें और सुरक्षा देने की प्रतिज्ञा नहीं दी है, और, यदि हम उसकी इच्छा को पूरा करने में असफल रहें, तो न ही उसने हमें शारीरिक पीड़ा या आर्थिक हानि देने की धमकी दी है। आज उसकी वाचा की आशीषें आत्मिक हैं, शारीरिक नहीं। फिर भी हमारे लिए यह जानना काफ़ी होना चाहिए कि यदि हम आज्ञाकारी होंगे, तो हम बहुतायत से "स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष" (इफि. 1:3) से आशीषित किए जाएँगे।

कोय डी. रोपर

समाप्ति नोट्स

[1]रिचर्ड एन. बोयन्स, *लैव्यव्यवस्था एन्ड गिनती*, वेस्टमिनिस्टर बाइबल कम्पेनियन (लूइसविल्ले: वेस्टमिनिस्टर जॉन नोक्स प्रेस, 2008), 37. [2]क्लाईड एम. वुड्स एन्ड जस्टिन एम. रोजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेन्ट्री (जोप्लिन, मो.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 2006), 80. [3]पापियों पर परमेश्वर का न्याय और दण्ड आने के अन्य उदाहरण, गिनती 16 में बलवा करने वाले लोगों को परमेश्वर के द्वारा मार डाला जाना और प्रेरितों के काम 5 में हनन्याह और सफीरा को दण्ड दिए जाने को शामिल करता है। [4]फिर भी, यह पहचान की जानी चाहिए कि कम-से-कम बाद के समय में, याजकों (महायाजक को छोड़) ने मन्दिर के पवित्र स्थान में नियमित रुप से धूप चढ़ाई। ज़कर्याह, जो कि यूहन्ना बपतिस्मादाता का पिता था, उसने यह कार्य लूका 1:8, 9 में किया। [5]इन सम्भावनाओं पर आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1980), 109-10 में बातचीत की गई है। [6]NAB इस प्रकार अनुवाद करती है, "जो मेरे निकट आते हैं उनके द्वारा मैं अपनी पवित्रता प्रकट करुँगा।" NJB कहती है, "जो लोग मेरे निकट हैं उनमें मैं अपनी पवित्रता प्रकट करुँगा।" [7]जॉन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 4 (डलास: वर्ड बुक्स, 1992), 133-34. [8]फिर से, यह संकेत करता है कि अध्याय 10 की घटनाएँ सम्भावित रुप से लैव्यव्यवस्था 9 की घटनाओं के दिन अथवा उसके एकदम बाद घटी होंगी। [9]क्रिस्टोफ़र जे. एच. राइट, "लैव्यव्यवस्था," इन न्यु बाइबल कमेन्ट्री: 21स्ट सेन्चुरी एडिशन, एड. डी. ए. कार्सन, आर. टी. फ़्रांस, जे. ए. मोट्यर, एन्ड जी. जे. वेन्हेम (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रेस, 1994), 136. [10]स्पष्ट रुप से उनके पास अन्य ज़िम्मेदारियाँ भी थीं, जैसे कि बलिदानों का संचालन करना।

[11]लैव्यव्यवस्था 11-15 के सम्बन्ध में "शुद्ध" और "अशुद्ध" और पवित्रता पर विस्तार के साथ विचार-विमर्श किया गया है। [12]इस कथन के पीछे यह कहने का मन नहीं है कि मूसा ने इस घटना को स्वयं रच दिया और इसे यहाँ स्थापित कर दिया और न ही इसका अर्थ यह है कि यह किसी समय में हुई और मूसा ने इसे यहाँ स्थापित कर दिया क्योंकि यह यहाँ पर उसके उद्देश्य के साथ सटीक बैठ रहा था। जैसा कि यह पद प्रेरित किए गए धर्मशास्त्र में शामिल किया गया है इसका अर्थ है कि यह घटना वास्तव में घटी है। ऊपरी तौर से यह नादाब और अबीहू की मृत्यु के एकदम बाद उत्पन्न हुई। अनेक ऐसी बातें हैं जो हुई हैं परन्तु उन्हें धर्मशास्त्र में रिकॉर्ड के रुप में नहीं रखा गया इसलिए जिन बातों का रिकॉर्ड रखा गया है वह कुछ उद्देश्य के साथ रखा गया है। [13]रॉय जेन ने इस सिद्धान्त को इस प्रकार समझाया: "इस प्रकार के बलिदान में से खाने के द्वारा उस समय बलिदान की सेवकाई

करने वाला याजक, (... 'दोष'; प्रायः 'पाप' को प्रदर्शित करता है...) बलिदान चढ़ाने वाले व्यक्ति के स्थान पर धर्म का भार उठाकर प्रायश्चित करता है और इस प्रकार प्रायश्चित की प्रक्रिया में एक पूर्ण योगदान करता है" (रॉय जेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2004], 190)। [14]आर. लेअर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रेंक ई. गेबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 568. हैरिस ने कहा कि याजकों की भूमिका ने व्यवस्था की "आत्मा" को दूषित नहीं किया, जिसमें उसने यह अर्थ दिया कि उनकी भूमिका ने व्यवस्था के पत्र को दूषित नहीं किया। [15]इस सन्दर्भ में हमें आवश्यक रुप से यह सीखने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए जैसा इन याजकों से उनकी गलती को सुधारने के लिए (अगर कुछ हो तो) अपेक्षा की गई। धर्मशास्त्र के ऐतिहासिक भाग अथवा कहानी के भाग बताई गई घटनाओं में लोगों के द्वारा किए गए पापों को बताना आवश्यक नहीं समझता। [16]डोन डिवेल्ट, *लैव्यव्यवस्था*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मो.: कॉलेज प्रेस, 1975), 167-68. [17]अनजाने पापों के विषय में, उदाहरण के लिए देखें, लैव्यव्यवस्था 4:2; "जानबूझकर" किए जाने वाले पापों के विषय में गिनती 15:30 में "विद्रोही" होकर पाप करने की आयतें देखें। [18]जॉर्ज ए. एफ़. नाइट ने नादाब और अबीहू के पाप के बारे में उचित बात कही, "उनके द्वारा किया गया यह काम ... परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता का निन्दापूर्ण कार्य और विश्वासघात था। ये लोग दृश्य रुप में कह रहे थे, 'परमेश्वर, हमारी आग आपकी आग के समान ही बहुत अच्छी है। हमें आपकी आग की आवश्यकता नहीं है'" (जॉर्ज ए. एफ़. नाइट, *लैव्यव्यवस्था*, द डेली स्टडी बाइबल [फ़िलादेल्फ़िया: वेस्टमिनिस्टर प्रेस, 1981], 58)। [19]बौएस, 37. [20]लैव्यव्यवस्था 16 में प्रायश्चित वाले दिन धूप चढ़ाने के विषय कहा गया है, परन्तु व्याख्याकर्ता सामान्यतः यह मानते हैं कि धूप की वेदी के लिए आग के स्त्रोत के संबंध में नियम, उस वेदी की आग के स्त्रोत के संबंध में किसी भी दिन पर भी सामान्य लागू था। नियम विशेषतया निर्धारित करता है कि होमबलि की वेदी की आग को अविरल जलते रहना था (देखिए 6:9, 12, 13)।

[21]संभवतः उन्होंने अन्य बातें में भी गलती की थी। उदाहरण के लिए, निर्गमन 30:7, 8 कहता है कि महायाजक को धूप की वेदी पर धूप जलाना था। नादाब और अबीहू याजक तो थे, परन्तु उनमें से कोई भी महायाजक नहीं था। संभवतः उनके पाप का एक भाग महायाजक के कार्य को अनुचित रीति से हड़पने का प्रयास करना भी था। यदि यह सत्य है तो उनके पाप में घमण्ड और परिकल्पना करना भी सम्मिलित थे। [22]कुछ व्याख्याकर्ता इस पापबलि के बकरे को अध्याय 9 वाला बकरा मानते हैं। यदि ऐसा है तो, अध्याय 10 की घटनाएँ या तो अध्याय 8 और 9 में वर्णन किए गए अभिषेक/समर्पण होने के तुरंत बाद अथवा उसी दिन घटित हुईं। अन्य इन आयतों में उल्लेखित "पापबलि" को इस्राएलियों द्वारा अपने पापों के क्षमा के लिए चढ़ाई जाने वाली दैनिक बलियों में से एक देखते हैं।